निष्कर्ष-

ऐसे बहुत ही कम निर्देशक हैं जिन्होंने सामाजिक मुद्दों पर ऐसी फिल्में बनाई हो जो पूरी तरह से कॉमेडी और गुदगुदी करने वाली फ़िल्म हैं। राजकुमार हिरानी उन्ही निर्देशको में से एक हैं बल्कि यह कहना गलत नहीं होगा कि राजकुमार हिरानी ने कॉमेडी फ़िल्म के एक अलग स्वरूप का विकास किया हैं। जहां कुछ लोगो का मानना हैं कि सिनेमा का सिर्फ तीन उद्देश्य होता हैं इंटरटेनमेंट, इंटरटेनमेंट, और इंटरटेनमेंट। इस बात को राजू हिरानी ने बकवास की श्रेणी मे रखते हुए यह साबित किया कि सिनेमा का उदेश्य सिर्फ इंटरटेन करना नहीं बल्कि इंटरटेनमेंट के साथ सामाजिक बुराइयों से लोगो को अवगत कराना भी है और यह एक फ़िल्मकार का फर्ज हैं।

हिन्दी सिनेमा के शुरुआती दौर मे जब फ़िल्मों मे आवाज का कोई नामो-निशान नहीं था उस समय के दर्शक कॉमेडी का आनंद उस समय के फ़िल्म चलने की गति के दौरान कुछ ऐसे हास्य दृश्य होते थे कि दर्शक अपनी हँसी रोक नहीं पाते थे। उस समय तकनीक इतनी विकसित नहीं थी फ्रेम-रेट की वजह से फ़िल्म रुक-रुक कर चलती थी। इसमे भी कॉमेडी उत्पन्न होती थी और दर्शक इसका आनंद उठाते थे। लेकिन जब फ़िल्मों मे आवाज का आगमन हुआ तब सिनेमा का एक नया दौर शुरू हुआ। इसमे अनेक तरह की फिल्में बनने लगी जिसमे कॉमेडी का भी एक स्थान था। लगभग फ़िल्मों मे बीच के दृश्यों मे कॉमेडी परोसा जाता था ताकि दर्शक भावुक और बोर ना हो। समय के साथ- साथ कॉमेडी का बर्चस्व बढ़ता रहा और इसमे परिवर्तन और नये प्रयोग होने लगे जिसमे निर्देशक अपने विजन के अनुसार फिल्में दर्शकों को परोसने लगे।

रोहित शेट्टी , साजिद,आदि फ़िल्मकारों ने केवल मनोरंजन को ध्यान मे रखकर फ़िल्म का निर्माण करते रहे और उनकी फिल्में बस अच्छा व्यवसाय कर कुछ दिनो बाद सभी के अंदर से गायब हो जाती हैं।

दर्शक केवल यही समझते रहे कि कॉमेडी का मतलब केवल मनोरंजन होता हैं। लेकिन जैसे-जैसे राजकुमार हिरानी की फिल्में सिनेमाघरों मे आयी कॉमेडी का पूरा स्वरूप बदल कर रख दिया। राजकुमार हिरानी की तमाम फिल्में यह बताती हैं कि कॉमेडी का सहयोग लेकर हम एक सार्थक फ़िल्म का निर्माण कर सकते हैं। नए फ़िल्मकार को चाहिए कि अगर वो कॉमेडी फ़िल्मों के निर्माण मे इच्छुक हैं तो वे एक संदेशात्मक कॉमेडी का निर्माण करे क्योंकि कॉमेडी फ़िल्मों के दर्शक भारत मे लगभग अस्सी प्रतिशत हैं। इस तनाव भरी जिंदगी में लगभग लोग यही चाहते हैं कि कुछ मनोरंजन हो जिसके लिए लोग कॉमेडी फ़िल्मों सहारा लेते हैं और इन फ़िल्मों के द्वारा अपना तनाव कम करने की कोशिश करते हैं। लेकिन फ़िल्म का उदेश्य सिर्फ इतना ही नहीं होना चाहिए कि जितनी देर दर्शक फ़िल्म देखे बस उतनी देर ही तनाव से दूर रहे। अगर मनुष्य की समस्याओ को भी ध्यान मे रखकर कॉमेडी फ़िल्मों का निर्माण किया जाये तो वो और बेहतर कॉमेडी और एक सार्थक फ़िल्म मानी जाएगी। अगर अध्याय द्वितीय में देखा जाये तो हिन्दी सिनेमा मे कॉमेडी का एक दौर किस प्रकार से चला हैं और किस-किस तरह से परिवर्तन आये हैं। साठ और सत्तर दशक के फ़िल्मों मे कॉमेडी करने के लिये नाटकीयता अधिक होती थी। लेकिन वर्तमान मे परिवर्तन हो चुका हैं अब कॉमेडी शब्दो और साधारण हाव-भाव से प्रगट किया जा रहा हैं। पहले कॉमेडी के लिए एक अलग से अभिनेता होता था, लेकिन अब खुद फ़िल्म का नायक ही कॉमेडी कर ले रहा हैं।

हिन्दी सिनेमा के कुछ फ़िल्मकारों ने एक नयी तरह की कॉमेडी की शुरुआत की हैं- एडल्ट कॉमेडी, जिसकी चर्चा शोध कार्य के द्वितीय अध्याय मे किया गया हैं। शोध के दृष्टिकोण से एडल्ट कॉमेडी के विषय मे यही निष्कर्ष निकलता हैं, कि एडल्ट कॉमेडी में अश्लील शब्द परोस कर मनोरंजन मात्र न किया जाये तो इसके द्वारा तमाम यौन समस्याओ और सेक्स के प्रति लोगो का नजरिया बदला जा

सकता हैं। जिस तरह आज भी सेक्स को लेकर लोगो के अंदर एक असहजता की भावना होती हैं वो कम से कम दूर हो जाये।

कॉमेडी फ़िल्मों पर गहन विचार किया जाये तो राजकुमार हिरानी एकमात्र ऐसे फ़िल्मकार हिन्दी सिने जगत मे निकले जिन्होने कॉमेडी का सिनेमा मे सही प्रयोग किया। रंगमंच और विज्ञापन के रास्ते सिनेमा मे जाने के बाद हिरानी ने लोगो को क्या चाहिए ये समझा और उनके सामने परोसा। दूसरे शब्दो मे कहा जाये तो हिरानी को यह बात समझ मे आ गयी थी कि दर्शकों का रुझान कॉमेडी की तरफ अधिक हैं इसलिए दर्शकों को जो कुछ भी देना हैं कॉमेडी और आसान भाषा के माध्यम से देना उचित होगा। राजकुमार हिरानी अपनी इसी शैली के साथ हिन्दी सिनेमा मे फिल्में बनाना प्रारम्भ किए और बहुत कम समय मे तमाम फ़िल्मकारों को पीछे छोड़ते हुए एक बड़ा मुकाम हासिल कर लिए ।

राजकुमार हिरानी की पहली निर्देशित फ़िल्म **'मुन्नाभाई एमबीबीएस'** को हिन्दी सिनेमा की पहली संदेशात्मक कॉमेडी फ़िल्म कहना गलत नही होगा। क्योंकि हिन्दी सिनेमा के इतिहास मे पहली बार ऐसा हुआ कि इतने आसान शब्दो मे इतनी बड़ी बात जो पूरे सिस्टम, मेडिकल व्यवस्था पर व्यंग करती हैं। वहीं **'लगे रहो मुन्नाभाई'** हास्यशैली मे लोगो को गांधीगिरी का पाठ पढाती हैं।

इसी प्रकार हिरानी की तीसरी फ़िल्म **'थ्री ईडियट्स'** भी शिक्षा व्यवस्था और रट्टामार शिक्षा पर व्यंग करती हैं और वैचारिक शिक्षा का समर्थन करती हैं डिग्री और ज्ञान मे बहुत अंतर होता हैं इसलिए ज्ञान पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए और ज्ञान को उसी क्षेत्र मे बढ़ाना चाहिए जिसमे रूचि हो। जिसमे रुचि होगा उस क्षेत्र मे काम करने से ही बेहतर किया जा सकता हैं। इन तमाम विषयो पर हिरानी ने इस फ़िल्म के द्वारा दर्शकों को एक सार्थक संदेश दिया।

फ़िल्म **'पीके'** मे धरम के ठेकेदारो और अंधविश्वासों पर व्यंग किया गया भरपूर कॉमेडी के साथ। अभी विभिन्न धर्मो मे किस तरह का अंधविश्वास फैलाया गया हैं जिसके द्वारा बाबाओ का एक बड़ा कारोबार चल रहा हैं। इन पक्षो को ध्यान मे रखते हुए तीखा व्यंग इस कॉमेडी फ़िल्म के द्वारा फ़िल्मकार राजकुमार हिरानी ने किया हैं।

इस शोध कार्य के दौरान राजकुमार हिरानी के द्वारा निर्देशित उनकी चारो फ़िल्मों पर गहन अध्ययन मैंने किया जिससे कुछ प्रमुख बाते सामने निकल कर आती हैं :-

- ❖ हिरानी की फ़िल्मों में भरपूर कॉमेडी होती हैं।
- ❖ हिरानी के फ़िल्मों का स्वरूप संदेशात्मक कॉमेडी हैं।
- ❖ हिरानी के फ़िल्म की भाषा बिल्कुल सरल और आम लोगो की होती हैं।
- ❖ फ़िल्मों का चरित्र आम लोगो से मिलता – जुलता होता हैं।
- ❖ नायक को नरेटर की तरह प्रयोग करते हैं जो समाज मे एक सार्थक संदेश कॉमेडी के माध्यम से देता हैं।
- ❖ तकनीकी रूप से हिरानी की फ़िल्म अव्वल होती हैं।

इस शोध कार्य के दौरान किए गये तमाम अध्ययन से यह निष्कर्ष सामने आता हैं कि हिरानी ने फ़िल्म भाषा की एक नयी हास्य शैली का विकास किया हैं। जो कि आगे आने वाले फ़िल्मकारों के लिए प्रेरणाप्रद साबित होगी। कॉमेडी के द्वारा ऐसी फ़िल्म बनाई जा सकती हैं जो समाज के लिए प्रेरणादायक हो और हिन्दी सिने जगत का नाम तथा भारतीय सिनेमा का नाम पूरी दुनिया मे रोशन करे।